

سُورَةُ الْاِسْرَاءِ

Surah 17 — Al-Israa (The Night Journey) · Meccan · 111 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ سُبْحَنَ الَّذِي أَسْرَىٰ بِعَبْدِهِ ۚ لَيْلًا ۚ مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي بَرَكْنَا حَوْلَهُ ۚ لِنُرِيَهُ ۚ مِّنْ ءَايَاتِنَا ۚ إِنَّهُ ۚ هُوَ السَّمِيعُ
الْبَصِيرُ

वह खुदा (हर ऐब से) पाक व पाकीज़ा है जिसने अपने बन्दों को रातों रात मस्जिदुल हराम (खान ऐ काबा) से मस्जिदुल अक़सा (आसमानी मस्जिद) तक की सैर कराई जिसके चौगिर्द हमने हर किस्म की बरकत मुहय्या कर रखी हैं ताकि हम उसको (अपनी कुदरत की) निशानियाँ दिखाए इसमें शक़ नहीं कि (वह सब कुछ) सुनता (और) देखता है

2

وَأَتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ إِلَّا تَتَّخِذُوا ۚ مِّنْ دُونِي وَكِيلًا ۚ

और हमने मूसा को किताब (तौरैत) अता की और उस को बनी इसराईल की रहनुमा करार दिया (और हुक्म दे दिया) कि ऐ उन लोगों की औलाद जिन्हें हम ने नूह के साथ कश्ती में सवार किया था

3

ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ ۚ إِنَّهُ ۚ كَانَ عَبْدًا ۚ شَكُورًا ۚ

मेरे सिवा किसी को अपना कारसाज़ न बनाना बेशक नूह बड़ा शुक्र गुज़ार बन्दा था

4

وَقَضَيْنَا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ فِي الْكِتَابِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوقًا ۚ
كَبِيرًا ۚ

और हमने बनी इसराईल से इसी किताब (तौरैत) में साफ़ साफ़ बयान कर दिया था कि तुम लोग रूए ज़मीन पर दो मरतबा ज़रूर फ़साद फैलाओगे और बड़ी सरकशी करोगे

5

فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ أُولَئِهِمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا ۖ لَنَا أُولُو بَأْسٍ ۖ شَدِيدٍ ۚ فَجَاسُوا ۚ
خِلَالَ الدِّيَارِ ۚ وَكَانَ وَعْدًا ۖ مَفْعُولًا ۚ

फिर जब उन दो फसादों में पहले का वक्त आ पहुँचा तो हमने तुम पर कुछ अपने बन्दों (नजतुलनस्र) और उसकी फौज को मुसल्लत (गालिब) कर दिया जो बड़े सख्त लड़ने वाले थे तो वह लोग तुम्हारे घरों के अन्दर घुसे (और खूब कत्ल व गारत किया) और खुदा के अज़ाब का वायदा जो पूरा होकर रहा

6

ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَأَمْدَدْنَاكُمْ بِأَمْوَالٍ ۖ وَبَنِينَ وَجَعَلْنَاكُمْ أَكْثَرَ نَفِيرًا

फिर हमने तुमको दोबारा उन पर ग़लबा देकर तुम्हारे दिन फेरे और माल से और बेटों से तुम्हारी मदद की और तुमको बड़े जत्थे वाला बना दिया

7

إِنْ أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنْتُمْ لِأَنْفُسِكُمْ ۖ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا ۖ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ آلِ آخِرَةٍ
لَيْسَ ۖ لَكُمْ ۚ وَلِيَدْخُلُوا ۚ الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ وَلِيُتَبِّرُوا ۚ مَا
عَلَوْا ۚ تَتَّبِعُونَ

अगर तुम अच्छे काम करोगे तो अपने फायदे के लिए अच्छे काम करोगे और अगर तुम बुरे काम करोगे तो (भी) अपने ही लिए फिर जब दूसरे वक्त का वायदा आ पहुँचा तो (हमने तैतूस रोगी को तुम पर मुसल्लत किया) ताकि वह लोग (मारते मारते) तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें (कि पहचाने न जाओ) और जिस तरह पहली दफा मस्जिद बैतुल मुक़द्दस में घुस गये थे उसी तरह फिर घुस पड़ें और जिस चीज़ पर काबू पाए खूब अच्छी तरह बरबाद कर दी

8

عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَنْ يَرْحَمَكُم ۖ وَإِنْ عُدتُمْ عُدْنَا ۖ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا

(अब भी अगर तुम चैन से रहो तो) उम्मीद है कि तुम्हारा परवरदिगार तुम पर तरस खाए और अगर (कहीं) वही शरारत करोगे तो हम भी फिर पकड़ेंगे और हमने तो काफिरों के लिए जहन्नुम को कैद खाना बना ही रखा है

9

إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ
لَهُمْ أَجْرًا ۖ كَبِيرًا ۖ

इसमें शक नहीं कि ये कुरान उस राह की हिदायत करता है जो सबसे ज्यादा सीधी है और जो ईमानदार अच्छे, अच्छे काम करते हैं उनको ये खुशखबरी देता है कि उनके लिए बहुत बड़ा अज़्र और सवाब (मौजूद) है

10

وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝۱

और ये भी कि बेशक जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते हैं उनके लिए हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है

11

وَيَدْعُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ ۝۲ بِالْخَيْرِ ۝۱ وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُولًا ۝۱

और आदमी कभी (आजिज़ होकर अपने हक में) बुराई (अज़ाब वगैरह की दुआ) इस तरह माँगता है जिस तरह अपने लिए भलाई की दुआ करता है और आदमी तो बड़ा जल्दबाज़ है

12

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَتَيْنِ ۝۱ فَمَحَوْنَا آيَةَ اللَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً ۝۲
لِتَبْتَغُوا ۝۱ فَضَلًا ۝۱ مِّن رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا ۝۲ عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ ۝۱ وَكُلَّ شَيْءٍ ۝۲
فَصَلَّنَاهُ تَفْصِيلًا ۝۱

और हमने रात और दिन को (अपनी कुदरत की) दो निशानियाँ करार दिया फिर हमने रात की निशानी (चाँद) को धुँधला बनाया और दिन की निशानी (सूरज) को रौशन बनाया (कि सब चीज़ें दिखाई दें) ताकि तुम लोग अपने परवरदिगार का फज़ल ढूँढ़ते फिरों और ताकि तुम बरसों की गिनती और हिसाब को जानो (बूझों) और हमने हर चीज़ को खूब अच्छी तरह तफ़सील से बयान कर दिया है

13

وَكُلَّ إِنْسَانٍ أَلْزَمْنَاهُ طَائِرَهُ ۝۱ فِي عُنُقِهِ ۝۲ وَنُخْرِجُ لَهُ ۝۳ يَوْمَ الْقِيَمَةِ كِتَابًا ۝۱ يَلْقَاهُ
مَنْشُورًا

और हमने हर आदमी के नामए अमल को उसके गले का हार बना दिया है (कि उसकी किस्मत उसके साथ रहे) और क़यामत के दिन हम उसे उसके सामने निकल के रख देंगे कि वह उसको एक खुली हुई किताब अपने रुबरु पाएगा

14

أَقْرَأُ كِتَابِكَ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ۝۱

और हम उससे कहेंगे कि अपना नामए अमल पढ़ले और आज अपने हिसाब के लिए तू आप ही काफी हैं

مَنْ أَهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ ۖ وَزِرَ أُخْرَىٰ ۚ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا ۖ

जो शरूख रुबरु होता है तो बस अपने फायदे के लिए यह पर आता है और जो शरूख गुमराह होता है तो उसने भटक कर अपना आप बिगाड़ा और कोई शरूख किसी दूसरे (के गुनाह) का बोझ अपने सर नहीं लेगा और हम तो जब तक रसूल को भेजकर तमाम हुज्जत न कर लें किसी पर अज़ाब नहीं किया करते

وَإِذَا أَرَدْنَا أَنْ نُهْلِكَ قَرْيَةً أَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا فَفَسَقُوا ۖ فِيهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنَاهَا تَدْمِيرًا ۖ

और हमको जब किसी बस्ती का वीरान करना मंज़ूर होता है तो हम वहाँ के खुशहालों को (इताअत का) हुक्म देते हैं तो वह लोग उसमें नाफरमानियाँ करने लगे तब वह बस्ती अज़ाब की मुस्तहक होगी उस वक्त हमने उसे अच्छी तरह तबाह व बरबाद कर दिया

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِنۢ بَعْدِ نُوحٍ ۖ وَكَفَىٰ لِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ ۖ خَبِيرًا ۖ

और नूह के बाद से (उस वक्त तक) हमने कितनी उम्मतों को हलाक कर मारा और (ऐ रसूल) तुम्हारा परवरदिगार अपने बन्दों के गुनाहों को जानने और देखने के लिए काफी है

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهُ ۖ فِيهَا مَا نَشَاءُ لِمَن نُّرِيدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهُ ۖ جَهَنَّمَ يَصْلَاهَا مَذْمُومًا ۖ مَذْحُورًا ۖ

(और गवाह याहिद की ज़रूरत नहीं) और जो शरूख दुनिया का ख्वाहाँ हो तो हम जिसे चाहते और जो चाहते हैं उसी दुनिया में सिरदस्त (फ़ौरन) उसे अता करते हैं (मगर) फिर हमने उसके लिए तो जहन्नुम ठहरा ही रखा है कि वह उसमें बुरी हालत से रौंदा हुआ दाखिल होगा

وَمَنْ أَرَادَ آخِرَةَ وَسَعَىٰ لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ ۖ فَأُو۟لَٰئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ
مَشْكُورًا ۝۱

और जो शरूअ आखिर का मुतमइनी हो और उसके लिए खूब जैसी चाहिए कोशिश भी की और वह ईमानदार भी है तो यही वह लोग हैं जिनकी कोशिश मक़बूल होगी

كُلًّا ۖ نُمِدُّ هَٰؤُلَاءِ وَهَٰؤُلَاءِ مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ ۖ وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ مَحْظُورًا

(ऐ रसूल) उनको (शरज़ सबको) हम ही तुम्हारे परवरदिगार की (अपनी) बख़्शिस से मदद देते हैं और तुम्हारे परवरदिगार की बख़्शिस तो (आम है) किसी पर बन्द नहीं

أَنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ وَلِلَّآخِرَةِ أَكْبَرُ دَرَجَاتٍ ۚ وَأَكْبَرُ
تَفْضِيلًا ۝۲

(ऐ रसूल) ज़रा देखो तो कि हमने बाज़ लोगों को बाज़ पर कैसी फज़ीलत दी है और आखिरत के दर्जे तो यकीनन (यहाँ से) कहीं बढ़के है और वहाँ की फज़ीलत भी तो कैसी बढ़ कर है

لَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا ءَاخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُومًا ۖ مَّخْذُولًا ۝۳

और देखो कहीं खुदा के साथ दूसरे को (उसका) शरीक न बनाना वरना तुम बुरे हाल में ज़लील रुसवा बैठे के बैठे रह जाओगे

ۚ وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا ۚ إِلَّا إِلَٰهًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۖ إِمَّا يَبُلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ
أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقُلْ لَهُمَا أُفٍّ ۖ وَلَا تَنْهَرُهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا ۖ كَرِيمًا ۝۴

और तुम्हारे परवरदिगार ने तो हुक्म ही दिया है कि उसके सिवा किसी दूसरे की इबादत न करना और माँ बाप से नेकी करना अगर उनमें से एक या दोनों तेरे सामने बुढ़ापे को पहुँचे (और किसी बात पर खफा हों) तो (ख़बरदार उनके जवाब में उफ़ तक) न कहना और न उनको झिड़कना और जो कुछ कहना सुनना हो तो बहुत अदब से कहा करो

وَأَخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَبِّ أَرْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيَانِي صَغِيرًا ۝۵

और उनके सामने नियाज़ (रहमत) से खाकसारी का पहलू झुकाए रखो और उनके हक़ में दुआ करो कि मेरे पालने वाले जिस तरह इन दोनों ने मेरे छोटेपन में मेरी मेरी परवरिश की है

رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا فِي نُفُوسِكُمْ ۚ إِنَّ تَكُونُوا ۚ صٰلِحِينَ فَإِنَّهُ ۚ كَانَ لِلْأَوْبِينَ غَفُورٌ ۚ ا

इसी तरह तू भी इन पर रहम फरमा तुम्हारे दिल की बात तुम्हारा परवरदिगार खूब जानता है अगर तुम (वाकई) नेक होगे और भूले से उनकी खता की है तो वह तुमको बख्श देगा क्योंकि वह तो तौबा करने वालों का बड़ा बख्शने वाला है

وَأَاتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ ۚ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ وَلَا تَبْذِرْ تَبْذِيرًا

और कराबतदारों और मोहताज और परदेसी को उनका हक दे दो और खबरदार फुज़ूल खर्ची मत किया करो

إِنَّ الْمُبْذِرِينَ كَانُوا ۚ إِخْوَانَ الشَّيْطَانِ ۚ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ ۚ كَفُورٌ ۚ ا

क्योंकि फुज़ूलखर्ची करने वाले यकीनन शैतानों के भाई है और शैतान अपने परवरदिगार का बड़ा नाशुकी करने वाला है

وَأِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمْ أَبْتِغَاءَ رَحْمَةٍ ۚ مِّن رَّبِّكَ تَرْجُوهَا فَقُلْ لَهُمْ قَوْلٌ ۚ ا مَيْسُورٌ ۚ ا

और तुमको अपने परवरदिगार के फज़ल व करम के इन्तज़ार में जिसकी तुम को उम्मीद हो (मजबूरन) उन (गरीबों) से मुँह मोड़ना पड़े तो नरमी से उनको समझा दो

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا ۚ ا مَحْسُورًا

और अपने हाथ को न तो गर्दन से बँधा हुआ (बहुत तंग) कर लो (कि किसी को कुछ दो ही नहीं) और न बिल्कुल खोल दो कि सब कुछ दे डालो और आखिर तुम को मलामत ज़दा हसरत से बैठना पड़े

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ ۚ كَانَ بِعِبَادِهِ ۚ خَبِيرٌ ۚ ا بَصِيرٌ ۚ ا

इसमें शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार जिसके लिए चाहता है रोज़ी को फराख (बढ़ा) देता है और जिसकी रोज़ी चाहता है तंग रखता है इसमें शक नहीं कि वह अपने बन्दों से बहुत बाख़बर और देखभाल रखने वाला है

وَلَا تَقْتُلُوا ۚ أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ ۚ ۚ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَإِيَّاكُمْ ۚ ۚ إِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْئًا ۚ ا

كَبِيرٌ ۚ ا

और (लोगों) मुफ़लसी (गरीबी) के खौफ से अपनी औलाद को क़त्ल न करो (क्योंकि) उनको और तुम को (सबको) तो हम ही रोज़ी देते हैं बेशक औलाद का क़त्ल करना बहुत सख्त गुनाह है

وَلَا تَقْرُبُوا ۚ الزَّنىٰ ۚ إِنَّهُ ۚ كَانَ فَحِشَةً ۚ وَسَاءَ سَبِيلًا ۚ

और (देखो) ज़िना के पास भी न फटकना क्योंकि बेशक वह बड़ी बेहयाई का काम है और बहुत बुरा चलन है

وَلَا تَقْتُلُوا ۚ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُومًا ۚ فَقَدْ جَعَلْنَا لَوْلِيَّهِ ۚ سُلْطٰنًا ۚ فَلَا يُسْرِفُ فِي الْقَتْلِ ۚ إِنَّهُ ۚ كَانَ مَنصُورًا ۚ

और जिस जान का मारना खुदा ने हराम कर दिया है उसके क़त्ल न करना मगर जायज़ तौर पर और जो शरूख़ नाहक मारा जाए तो हमने उसके वारिस को (क्रातिल पर क़सास का क़ाबू दिया है तो उसे चाहिए कि क़त्ल (खून का बदला लेने) में ज्यादाती न करे बेशक वह मदद दिया जाएगा

وَلَا تَقْرُبُوا ۚ مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۚ ۚ وَأَوْفُوا ۚ بِالْعَهْدِ ۚ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُولًا ۚ

(कि क़त्ल ही करे और माफ़ न करे) और यतीम जब तक जवानी को पहुँचे उसके माल के क़रीब भी न पहुँच जाना मगर हाँ इस तरह पर कि (यतीम के हक़ में) बेहतर हो और एहद को पूरा करो क्योंकि (क़यामत में) एहद की ज़रूर पूछ ग़छ होगी

وَأَوْفُوا ۚ الْكَيْلَ إِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوا ۚ بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ۚ ذٰلِكَ خَيْرٌ ۚ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ۚ

और जब नाप तौल कर देना हो तो पैमाने को पूरा भर दिया करो और (जब तौल कर देना हो तो) बिल्कुल ठीक तराजू से तौला करो (मामले में) यही (तरीक़ा) बेहतर है और अन्जाम (भी उसका) अच्छा है

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ ۚ عِلْمٌ ۚ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُو۟لَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا ۚ

और जिस चीज़ का कि तुम्हें यक़ीन न हो (ख़्वाह मा ख़्वाह) उसके पीछे न पड़ा करो (क्योंकि) कान और आँख और दिल इन सबकी (क़यामत के दिना यक़ीनन बाज़पुरस होती है

وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۚ إِنَّكَ لَن تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَن تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا ۚ

और (देखो) ज़मीन पर अकड़ कर न चला करो क्योंकि तू (अपने इस धमाके की चाल से) न तो ज़मीन को हरगिज़ फाड़ डालेगा और न (तनकर चलने से) हरगिज़ लम्बाई में पहाड़ों के बराबर पहुँच सकेगा

كُلُّ ذَلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ ۚ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوهًا ۚ

(ऐ रसूल) इन सब बातों में से जो बुरी बात है वह तुम्हारे परवरदिगार के नज़दीक नापसन्द है

ذَلِكَ مِمَّا أَوْحَىٰ إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۚ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا ءَاخَرَ فَتُلْقَىٰ فِي جَهَنَّمَ مَلُومًا ۚ مَدْحُورًا

ये बात तो हिकमत की उन बातों में से जो तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हारे पास 'वही' भेजी और खुदा के साथ कोई दूसरा माबूद न बनाना और न तू मलामत ज़दा राइन्द (धुत्कारा) होकर जहन्नुम में झोंक दिया जाएगा

أَفَأَصْفَاكُمْ رَبُّكُم بِالْبَنِينَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلَائِكَةِ إِنثًا ۚ إِنَّكُمْ لَتَقُولُونَ قَوْلًا عَظِيمًا ۚ

(ऐ मुशरेकीन मक्का) क्या तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हें चुन चुन कर बेटे दिए हैं और खुद बेटियाँ ली हैं (यानि) फरिश्ते इसमें शक नहीं कि बड़ी (सख्त) बात कहते हो

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ لِيَذَّكَّرُوا ۚ وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا نُفُورًا ۚ

और हमने तो इसी कुरान में तरह तरह से बयान कर दिया ताकि लोग किसी तरह समझें मगर उससे तो उनकी नफरत ही बढ़ती गई

قُلْ لَوْ كَانَ مَعَهُ ۙ إِلَهٌ ءَاِلَهُةٌ ۙ كَمَا يَقُولُونَ إِذًا ۚ لَآبْتَغُوا ۙ إِلَىٰ ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا ۚ

(ऐ रसूल उनसे) तुम कह दो कि अगर खुदा के साथ जैसा ये लोग कहते हैं और माबूद भी होते तो अब तक उन माबूदों ने अर्श तक (पहुँचाने की कोई न कोई राह निकाल ली होती

سُبْحَنَهُ ۙ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا ۙ كَبِيرًا ۚ

जो बेहूदा बातें ये लोग (खुदा की निस्वत) कहा करते हैं वह उनसे बहुत बढ़के पाक व पाकीज़ा और बरतर है

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمَوَاتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۚ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ ۚ
وَلَكِنْ لَا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ ۚ إِنَّهُ ۚ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۝۱

सातों आसमान और ज़मीन और जो लोग इनमें (सब) उसकी तस्बीह करते हैं और (सारे जहाँ) में कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी (हम्द व सना) की तस्बीह न करती हो मगर तुम लोग उनकी तस्बीह नहीं समझते इसमें शक नहीं कि वह बड़ा बुर्दबार बख्शने वाला है

وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بَالًا خَرَةً حِجَابًا ۝۱
مَسْتُورًا ۝۱

और जब तुम कुरान पढ़ते हो तो हम तुम्हारे और उन लोगों के दरमियान जो आखिरत का यकीन नहीं रखते एक गहरा पर्दा डाल देते हैं

وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۝۱ ۚ وَإِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ ۝۱ وَلَوَّا ۝۱ عَلَى أَدْبُرِهِمْ نُفُورًا ۝۱

और (गोया) हम उनके कानों में गरानी पैदा कर देते हैं कि न सुन सकें जब तुम कुरान में अपने परवरदिगार का तन्हा जिक्र करते हो तो कुफ़ार उलटे पावँ नफरत करके (तुम्हारे पास से) भाग खड़े होते हैं

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُونَ بِهِ ۝۱ إِذْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ نَجْوَىٰ إِذْ يَقُولُ الظَّالِمُونَ
إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا ۝۱ مَسْحُورًا

जब ये लोग तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं तो जो कुछ ये ग़ौर से सुनते हैं हम तो खूब जानते हैं और जब ये लोग बाहम कान में बात करते हैं तो उस वक्त ये ज़ालिम (ईमानदारों से) कहते हैं कि तुम तो बस एक (दीवाने) आदमी के पीछे पड़े हो जिस पर किसी ने जादू कर दिया है

أَنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا ۝۱ لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا ۝۱ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ۝۱

(ऐ रसूल) ज़रा देखो तो ये कम्बख्त तुम्हारी निस्वत कैसी कैसी फ़ब्तियाँ कहते हैं तो (इसी वजह से) ऐसे गुमराह हुए कि अब (हक़ की) राह किसी तरह पा ही नहीं सकते

وَقَالُوا ۚ أَإِذَا كُنَّا عِظْمًا ۚ وَرُفَّتَا ۚ أَيْنَا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا ۚ ۚ جَدِيدًا ۚ ۚ

और ये लोग कहते हैं कि जब हम (मरने के बाद सड़ गल कर) हड्डियाँ रह जाएँगे और रेज़ा रेज़ा हो जाएँगे तो क्या नये सिरे से पैदा करके उठा खड़े किए जाएँगे

ۚ قُلْ كُونُوا ۚ حِجَارَةً أَوْ حَدِيدًا

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि तुम (मरने के बाद) चाहे पत्थर बन जाओ या लोहा या कोई और चीज़ जो तुम्हारे ख्याल में बड़ी (सख्त) हो

أَوْ خَلْقًا ۚ ۚ مِمَّا يَكْبُرُ فِي صُدُورِكُمْ ۚ ۚ فَسَيَقُولُونَ مَن يُعِيدُنَا ۚ ۚ قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ
أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ ۚ ۚ فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَى هُوَ ۚ ۚ قُلْ عَسَىٰ أَن يَكُونَ
قَرِيبًا ۚ ۚ

और उसका ज़िन्दा होना दुश्वार हो वह भी ज़रूर ज़िन्दा हो गई तो ये लोग अनक़रीब ही तुम से पूछेंगे भला हमें दोबारा कौन ज़िन्दा करेगा तुम कह दो कि वही (खुदा) जिसने तुमको पहली मरतबा पैदा किया (जब तुम कुछ न थे) इस पर ये लोग तुम्हारे सामने अपने सर मटकाएँगे और कहेंगे (अच्छा अगर होगा) तो आखिर कब तुम कह दो कि बहुत जल्द अनक़रीब ही होगा

يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ ۚ ۚ وَتَظُنُّونَ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا ۚ ۚ

जिस दिन खुदा तुम्हें (इसराफ़ील के ज़रिए से) बुलाएगा तो उसकी हम्दो सना करते हुए उसकी तामील करोगे (और क़ब्रों से निकलोगे) और तुम ख्याल करोगे कि (मरने के बाद क़ब्रों में) बहुत ही कम ठहरे

وَقُلْ لِّلْعِبَادِ يَقُولُوا ۚ ۚ الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنزَغُ بَيْنَهُمْ ۚ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ
كَانَ لِلْإِنسَانِ عَدُوًّا ۚ ۚ مُبِينًا ۚ ۚ

और (ऐ रसूल) मेरे (सच्चे) बन्दों (मोमिनों से कह दो कि वह (काफ़िरों से) बात करें तो अच्छे तरीके से (सख्त कलामी न करें) क्योंकि शैतान तो (ऐसी ही) बातों से फसाद डलवाता है इसमें तो शक़ ही नहीं कि शैतान आदमी का खुला हुआ दुश्मन है

رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ ۚ إِنَّ يَشَاءُ يَرْحَمَكُمُ أَوْ إِنَّ يَشَاءُ يُعَذِّبِكُمْ ۚ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ
وَكِيلًا ۚ

तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारे हाल से खूब वाकिफ है अगर चाहेगा तुम पर रहम करेगा और अगर चाहेगा तुम पर अज़ाब करेगा और (ऐ रसूल) हमने तुमको कुछ उन लोगों का ज़िम्मेदार बनाकर नहीं भेजा है

وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيِّ ۚ نَ عَلَى
بَعْضٍ ۚ ۚ وَءَاتَيْنَا دَاوُدَ زَبُورًا ۚ

और जो लोग आसमानों में हैं और ज़मीन पर हैं (सब को) तुम्हारा परवरदिगार खूब जानता है और हम ने यक़ीनन बाज़ पैग़म्बरों को बाज़ पर फज़ीलत दी और हम ही ने दाऊद को ज़बूर अता की

قُلْ أَدْعُوا ۚ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُونِهِ ۚ فَلَا يَمْلِكُونَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا

(ऐ रसूल) तुम उनसे कह दो कि खुदा के सिवा और जिन लोगों को माबूद समझते हो उनको (वक्त पड़े) पुकार के तो देखो कि वह न तो तुम से तुम्हारी तकलीफ ही दफा कर सकते हैं और न उसको बदल सकते हैं

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ ۚ
وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ ۚ ۚ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ۚ

ये लोग जिनको मुशरेकीन (अपना खुदा समझकर) इबादत करते हैं वह खुद अपने परवरदिगार की कुरबत के ज़रिए ढूँढते फिरते हैं कि (देखो) इनमें से कौन ज्यादा कुरबत रखता है और उसकी रहमत की उम्मीद रखते और उसके अज़ाब से डरते हैं इसमें शक़ नहीं कि तेरे परवरदिगार का अज़ाब डरने की चीज़ है

وَإِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَمَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا ۚ ۚ
كَانَ ذَلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ۚ

और कोई बस्ती नहीं है मगर रोज़ क़यामत से पहले हम उसे तबाह व बरबाद कर छोड़ेंगे या (नाफरमानी) की सज़ा में उस पर सख्त से सख्त अज़ाब करेंगे (और) ये बात किताब (लौहे महफूज़) में लिखी जा चुकी है

وَمَا مَنَعَنَا أَنْ نُرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَنْ كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُونَ ﴿٩﴾ وَءَاتَيْنَا ثُمُودَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً ﴿١٠﴾ فَظَلَمُوا ﴿١١﴾ بِهَا ﴿١٢﴾ وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيَاتِ إِلَّا تَخْوِيفًا ﴿١٣﴾

और हमें मौजिजात भेजने से किसी चीज़ ने नहीं रोका मगर इसके सिवा कि अगलों ने उन्हें झुठला दिया और हमने क्रौमे समूद को (मौजिजे से) ऊँटनी अता की जो (हमारी कुदरत की) दिखाने वाली थी तो उन लोगों ने उस पर जुल्म किया यहाँ तक कि मार डाला और हम तो मौजिजे सिर्फ डराने की गरज़ से भेजा करते हैं

وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ ﴿١٤﴾ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِي أَرَيْنَاكَ إِلَّا فِتْنَةً ﴿١٥﴾ لِلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ ﴿١٦﴾ وَنُخَوِّفُهُمْ فَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا ﴿١٧﴾

और (ऐ रसूल) वह वक्त याद करो जब तुमसे हमने कह दिया था कि तुम्हारे परवरदिगार ने लोगों को (हर तरफ से) रोक रखा है कि (तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते और हमने जो ख्वाब तुमाको दिखलाया था तो बस उसे लोगों (के ईमान) की आजमाइश का ज़रिया ठहराया था और (इसी तरह) वह दरख्त जिस पर कुरान में लानत की गई है और हम बावजूद कि उन लोगों को (तरह तरह) से डराते हैं मगर हमारा डराना उनकी सख्त सरकशी को बढ़ाता ही गया

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا ﴿١٨﴾ لِآدَمَ فَسَجَدُوا ﴿١٩﴾ إِلَّا إِبْلِيسَ قَالَ أَأَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِينًا ﴿٢٠﴾

और जब हम ने फरिश्तों से कहा कि आदम को सज्जदा करो तो सबने सज्जदा किया मगर इबलीस वह (गुरुर से) कहने लगा कि क्या मैं ऐसे शरूख को सज्जदा करूँ जिसे तूने मिट्टी से पैदा किया है

قَالَ أَرَأَيْتَكَ هَذَا الَّذِي كَرَّمْتَ عَلَيَّ لَئِنْ أَخَّرْتَنِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ لَأَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهُ ﴿٢١﴾ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٢٢﴾

और (शेखी से) बोला भला देखो तो सही यही वह शरूख है जिसको तूने मुझ पर फज़ीलत दी है अगर तू मुझ को क़यामत तक की मोहलत दे तो मैं (दावे से कहता हूँ कि) कम लोगों के सिवा इसकी नस्ल की जड़ काटता रहूँगा

قَالَ أَذْهَبُ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَإِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ جَزَاءً ﴿٢٣﴾ مَوْفُورًا ﴿٢٤﴾

खुदा ने फरमाया चल (दूर हो) उनमें से जो शरूख तेरी पैरवी करेगा तो (याद रहे कि) तुम सबकी सज़ा जहन्नुम है और वह भी पूरी पूरी सज़ा है

وَأَسْتَفْزِرُ مَنْ أَسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَأَجْلِبُ عَلَيْهِمُ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكُهُمْ
فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ وَعَدَهُمْ ۚ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا

और इसमें से जिस पर अपनी (चिकनी चुपड़ी) बात से क़ाबू पा सके वहाँ और अपने (चेलों के लश्कर) सवार और पैदल (सब) से चढ़ाई कर और माल और औलाद में उनके साथ साझा करे और उनसे (खूब झूठे) वायदे कर और शैतान तो उनसे जो वायदे करता है धोखे के सिवा कुछ नहीं होता

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ ۚ ۚ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ وَكِيلًا ۚ

बेशक जो मेरे (खास) बन्दे हैं उन पर तेरा ज़ोर नहीं चल (सकता) और कारसाज़ी में तेरा परवरदिगार काफी है

رَبُّكُمُ الَّذِي يُزْجِي لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا ۚ مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ ۚ كَانَ بِكُمْ
رَحِيمًا ۚ

लोगों) तुम्हारा परवरदिगार वह (कादिर मुत्तलिक्) है जो तुम्हारे लिए समन्दर में जहाज़ों को चलाता है ताकि तुम उसके फ़ज़ल व करम (रोज़ी) की तलाश करो इसमें शक़ नहीं कि वह तुम पर बड़ा मेहरबान है

وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ إِلَّا إِلَٰهَ ۚ فَلَمَّا نَجَّكُم إِلَى الْبَرِّ
أَعْرَضْتُمْ ۚ وَكَانَ الْإِنْسَانُ كَفُورًا ۚ

और जब समन्दर में कभी तुम को कोई तकलीफ़ पहुँचे तो जिनकी तुम इबादत किया करते थे ग़ायब हो गए मगर बस वही (एक खुदा याद रहता है) उस पर भी जब खुदा ने तुम को छुटकारा देकर खुशकी तक पहुँचा दिया तो फिर तुम इससे मुँह मोड़ बैठें और इन्सान बड़ा ही नाशुक्ता है

أَفَأَمِنْتُمْ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۚ ثُمَّ لَا تَجِدُوا ۚ لَكُمْ
وَكِيلًا ۚ

तो क्या तुम उसको इस का भी इत्मिनान हो गया कि वह तुम्हें खुशकी की तरफ (ले जाकर) (कारुन की तरह) ज़मीन में धंसा दे या तुम पर (कौम) लूत की तरह पत्थरों का मेंह बरसा दे फिर (उस वक्त) तुम किसी को अपना कारसाज़ न पाओगे

أَمْ أَمِنْتُمْ أَنْ يُعِيدَكُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَىٰ فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا ۖ مِّنَ الرِّيحِ فَيُغْرِقَكُمْ
بِمَا كَفَرْتُمْ ۚ ثُمَّ لَا تَجِدُوا ۚ لَكُمْ عَلَيْنَا بِهِ ۚ تَبِيعًا ۚ

या तुमको इसका भी इत्मेनान हो गया कि फिर तुमको दोबारा इसी समन्दर में ले जाएगा उसके बाद हवा का एक ऐसा झोका जो (जहाज़ के) परखचे उड़ा दे तुम पर भेजे फिर तुम्हें तुम्हारे कुफ़र की सज़ा में डुबा मारे फिर तुम किसी को (ऐसा हिमायती) न पाओगे जो हमारा पीछा करे और (तुम्हें छोड़ा जाए)

ۚ وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَاهُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ
عَلَىٰ كَثِيرٍ ۚ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا ۚ

और हमने यक़ीनन आदम की औलाद को इज्ज़त दी और खुशकी और तरी में उनको (जानवरों कश्तियों के ज़रिए) लिए लिए फिरे और उन्हें अच्छी अच्छी चीज़ें खाने को दी और अपने बहुतेरे मखलूक़ात पर उनको अच्छी खासी फज़ीलत दी

يَوْمَ نَدْعُوا ۚ كُلَّ أَنَاسٍ ۚ بِأَمِّمِهِمْ ۚ فَمَنْ أُوتِيَ كِتَابُهُ ۚ بِيَمِينِهِ ۚ فَأُولَٰئِكَ يَقْرَءُونَ
كِتَابَهُمْ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ۚ

उस दिन (को याद करो) जब हम तमाम लोगों को उन पेशवाओं के साथ बुलाएँगे तो जिसका नामए अमल उनके दाहिने हाथ में दिया जाएगा तो वह लोग (खुश खुश) अपना नामए अमल पढ़ने लगेंगे और उन पर रेशा बराबर जुल्म नहीं किया जाएगा

وَمَنْ كَانَ فِي هَذِهِ ۚ أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَىٰ وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۚ

और जो शरूख इस (दुनिया) में (जान बूझकर) अंधा बना रहा तो वह आखिरत में भी अंधा ही रहेगा और (नजात) के रास्ते से बहुत दूर भटका सा हुआ

وَإِنْ كَادُوا ۚ لَيَفْتِنُونَكَ عَنِ الَّذِي أُوحِيَٰنَا إِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهُ ۚ ۚ وَإِذًا ۚ
لَّا تَخْذُوكَ خَلِيلًا ۚ

और (ऐ रसूल) हमने तो (कुरान) तुम्हारे पास 'वही' के ज़रिए भेजा अगर चे लोग तो तुम्हें इससे बहकाने ही लगे थे ताकि तुम कुरान के अलावा फिर (दूसरी बातों का) इफ़तेरा बाँधों और (जब तुम ये कर गुज़रते उस वक्त ये लोग तुम को अपना सच्चा दोस्त बना लेते

وَلَوْلَا أَنْ ثَبَّتْنَاكَ لَقَدْ كِدْتَ تَرْكَنُ إِلَيْهِمْ شَيْئًا قَلِيلًا

और अगर हम तुमको साबित कदम न रखते तो ज़रूर तुम भी ज़रा (ज़हूर) झुकने ही लगते

إِذَا لَأَذْنُكَ ضِعْفَ الْحَيَاةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيرًا

और (अगर तुम ऐसा करते तो) उस वक्त हम तुमको ज़िन्दगी में भी और मरने पर भी दोहरे (अज़ाब) का मज़ा चखा देते और फिर तुम को हमारे मुक़ाबले में कोई मददगार भी न मिलता

وَإِنْ كَادُوا لَيَسْتَفِزُّوكَ مِنَ الْأَرْضِ لِيُخْرِجُوكَ مِنْهَا وَإِذَا لَا يَلْبُثُونَ خِلْفَكَ إِلَّا قَلِيلًا

और ये लोग तो तुम्हें (सर ज़मीन मक्के) से दिल बर्दाश्त करने ही लगे थे ताकि तुम को वहाँ से (शाम की तरफ) निकाल बाहर करें और ऐसा होता तो तुम्हारे पीछे में ये लोग चन्द रोज़ के सिवा ठहरने भी न पाते

سُنَّةَ مَنْ قَدْ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيلًا

तुमसे पहले जितने रसूल हमने भेजे हैं उनका बराबर यही दस्तूर रहा है और जो दस्तूर हमारे (ठहराए हुए) हैं उनमें तुम तग्य्युर तबद्दुल (रद्दो बदल) न पाओगे

أَقِمِ الصَّلَاةَ لِذُلُوكِ الشَّمْسِ إِلَى غَسَقِ اللَّيْلِ وَقُرْآنَ الْفَجْرِ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا

(ऐ रसूल) सूरज के ढलने से रात के अंधेरे तक नमाज़े ज़ोहर, अस्त्र, मग़रिब, इशा पढ़ा करो और नमाज़ सुबह (भी) क्योंकि सुबह की नमाज़ पर (दिन और रात दोनों के फरिश्तों की) गवाही होती है

وَمِنَ اللَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهِ نَافِلَةً لَكَ عَسَى أَنْ يَبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَحْمُودًا

और रात के ख़ास हिस्से में नमाज़े तहज्जुद पढ़ा करो ये सुन्नत तुम्हारी ख़ास फज़ीलत हैं करीब है कि क़यामत के दिन खुदा तुमको मक़ामे महमूद तक पहुँचा दे

وَقُلْ رَبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ ۙ وَاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ ۙ وَاَجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ
سُلْطٰنًا ۙ اَنْصِيْرًا ۙ

और ये दुआ माँगा करो कि ऐ मेरे परवरदिगार मुझे (जहाँ) पहुँचा अच्छी तरह पहुँचा और मुझे (जहाँ से निकाल) तो अच्छी तरह निकाल और मुझे खास अपनी बारगाह से एक हुकूमत अता फरमा जिस से (हर किस्म की) मदद पहुँचे

وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۚ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ۙ

और (ऐ रसूल) कह दो कि (दीन) हक़ आ गया और बातिल नेस्तनाबूद हुआ इसमें शक़ नहीं कि बातिल मिटने वाला ही था

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْءَانِ مَا هُوَ شِفَاءٌ ۙ وَرَحْمَةٌ ۙ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ الظَّالِمِيْنَ اِلَّا
خَسَارًا ۙ

और हम तो कुरान में वही चीज़ नाज़िल करते हैं जो मोमिनों के लिए (सरासर) शिफा और रहमत है (मगर) नाफरमानों को तो घाटे के सिवा कुछ बढ़ाता ही नहीं

وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَأَىٰ بِجَانِبِهِ ۙ ۙ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَئُوسًا ۙ

और जब हमने आदमी को नेअमत अता फरमाई तो (उल्टे) उसने (हमसे) मुँह फेरा और पहलू बचाने लगा और जब उसे कोई तकलीफ छू भी गई तो मायूस हो बैठा

قُلْ كُلُّ ۙ يَعْمَلُ عَلَىٰ شَاكِلَتِهِ ۙ فَرِيْكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اٰهْدٰى سَبِيْلًا ۙ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि हर (एक अपने तरीके पर कारगुज़ारी करता है फिर तुम में से जो शरूष बिल्कुल ठीक सीधी राह पर है तुम्हारा परवरदिगार (उससे) खूब वाकिफ है

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ ۚ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّيْ وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا ۙ

और (ऐ रसूल) तुमसे लोग रूह के बारे में सवाल करते हैं तुम (उनके जवाब में) कह दो कि रूह (भी) मेरे परदिगार के हुक्म से (पैदा हुई है) और तुमको बहुत थोड़ा सा इल्म दिया गया है

وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهِ ۖ عَلَيْنَا وَكِيلًا

(इसकी हकीकत नहीं समझ सकते) और (ऐ रसूल) अगर हम चाहे तो जो (कुरान) हमने तुम्हारे पास 'वही' के ज़रिए भेजा है (दुनिया से) उठा ले जाएँ फिर तुम अपने वास्ते हमारे मुकाबले में कोई मददगार न पाओगे

إِلَّا رَحْمَةً ۖ مِّن رَّبِّكَ ۚ إِنَّ فَضْلَهُ ۖ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا ۚ

मगर ये सिर्फ तुम्हारे परवरदिगार की रहमत है (कि उसने ऐसा किया) इसमें शक नहीं कि उसका तुम पर बड़ा फ़ज़ल व करम है

قُلْ لِّئِنْ أَجْتَمَعَتِ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَىٰ أَن يَأْتُوا ۖ بِمِثْلِ هَٰذَا الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ ۖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ۖ ظَهِيرًا ۖ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि (अगर सारे दुनिया जहाँन के) आदमी और जिन इस बात पर इकट्ठे हो कि उस कुरान का मिसल ले आएँ तो (ना मुमकिन) उसके बराबर नहीं ला सकते अगरचे (उसको कोशिश में) एक का एक मददगार भी बने

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِن كُلِّ مَثَلٍ ۖ فَأَبَىٰ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ۖ

और हमने तो लोगों (के समझाने) के वास्ते इस कुरान में हर किस्म की मसलें अदल बदल के बयान कर दीं उस पर भी अक्सर लोग बग़ैर नाशुक्की किए नहीं रहते

وَقَالُوا ۖ لَن نُّؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْأَرْضِ يَنۢبُوعًا

(ऐ रसूल कुफ़ार मक्के ने) तुमसे कहा कि जब तक तुम हमारे वास्ते ज़मीन से चश्मा (न) बहा निकालोगे हम तो तुम पर हरगिज़ ईमान न लाएँगे

أَوْ تَكُونَ لَكَ جَنَّةٌ ۖ مِّن نَّخِيلٍ ۖ وَعِنَبٍ ۖ فَتُفَجَّرَ الْأَنْهَارُ خِلَالَهَا تَفْجِيرًا

या (ये नहीं तो) खजूरों और अंगूरों का तुम्हारा कोई बाग़ हो उसमें तुम बीच बीच में नहरे जारी करके दिखा दो

أَوْ تُسْقِطَ السَّمَاءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا أَوْ تَأْتِيَ بِاللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ قَبِيلًا

या जैसा तुम गुमान रखते थे हम पर आसमान ही को टुकड़े (टुकड़े) करके गिराओ या खुदा और फरिश्तों को (अपने क़ौल की तस्दीक) में हमारे सामने (गवाही में ला खड़ा कर दिया

أَوْ يَكُونَ لَكَ بَيْتٌ؟ مِّنْ زُخْرَفٍ أَوْ تَرْقَىٰ فِي السَّمَاءِ وَلَنْ نُؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتَّىٰ تُنَزَّلَ عَلَيْنَا كِتَابًا نَّقْرُؤُهُ؟ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّي هَلْ كُنْتُ إِلَّا بَشَرًا رَسُولًا؟

और जब तक तुम हम पर खुदा के यहाँ से एक किताब न नाज़िल करोगे कि हम उसे खुद पढ़ भी लें उस वक्त तक हम तुम्हारे (आसमान पर चढ़ने के भी) कायल न होंगे (ऐ रसूल) तुम कह दो कि सुबहान अल्लाह मैं एक आदमी (खुदा के) रसूल के सिवा आखिर और क्या हूँ

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا؟ إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ إِلَّا أَنْ قَالُوا؟ أُبْعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَسُولًا؟

(जो ये बेहूदा बातें करते हो) और जब लोगों के पास हिदायत आ चुकी तो उनको ईमान लाने से इसके सिवा किसी चीज़ ने न रोका कि वह कहने लगे कि क्या खुदा ने आदमी को रसूल बनाकर भेजा है

قُلْ لَوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ مَلَكَةٌ؟ يَمْشُونَ مُطْمَئِنِّينَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِم مِّنَ السَّمَاءِ مَلَكًا؟ رَسُولًا؟

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगर ज़मीन पर फ़रिश्ते (बसे हुये) होते कि इत्मेनान से चलते फिरते तो हम उन लोगों के पास फ़रिश्ते ही को रसूल बनाकर नाज़िल करते

قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا؟ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ؟ إِنَّهُ؟ كَانَ بِعِبَادِهِ؟ خَبِيرًا؟ بَصِيرًا؟

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि हमारे तुम्हारे दरमियान गवाही के वास्ते बस खुदा काफी है इसमें शक नहीं कि वह अपने बन्दों के हाल से खूब वाक़िफ और देखता रहता है

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۖ وَمَنْ يُضِلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِهِ ۚ ۚ
وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ عُمِيَ ۖ ۚ وَيُكْمَلُ ۖ ۚ وَصُمُّ ۖ ۚ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ ۚ
كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنَاهُمْ سَعِيرًا ۖ ۚ

और खुदा जिसकी हिदायत करे वही हिदायत याफता है और जिसको गुमराही में छोड़ दे तो (याद रखो कि) फिर उसके सिवा किसी को उसका सरपरस्त न पाआगे और क़यामत के दिन हम उन लोगों का मुँह के बल औंधे और गूँगे और बहरे क़ब्रों से उठाएँगे उनका ठिकाना जहन्नुम है कि जब कभी बुझने को होगी तो हम उन लोगों पर (उसे) और भड़का देंगे

ذَٰلِكَ جَزَاءُ هُم بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا ۖ ۚ بِآيَاتِنَا وَقَالُوا ۖ ۚ أَإِذَا كُنَّا عِظْمًا ۖ ۚ وَرُفَاتًا أَيْنَا لَمَبْعُوثُونَ
خَلْقًا ۖ ۚ جَدِيدًا ۖ ۚ

ये सज़ा उनकी इस वज़ह से है कि उन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया और कहने लगे कि जब हम (मरने के बाद सड़ गल) कर हड्डियाँ और रेज़ा रेज़ा हो जाएँगीं तो क्या फिर हम नये सिरे से पैदा करके उठाए जाएँगे

ۖ ۚ أَوَلَمْ يَرَوْا ۖ ۚ أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلَىٰ اَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ
وَجَعَلَ لَهُمْ اٰجَلًا ۖ ۚ لَا رَيْبَ فِيْهِ فَاَبٰى الظّٰلِمُوْنَ اِلَّا كُفُوْرًا ۖ ۚ

क्या उन लोगों ने इस पर भी नहीं ग़ौर किया कि वह खुदा जिसने सारे आसमान और ज़मीन बनाए इस पर भी (ज़रूर) क़ादिर है कि उनके ऐसे आदमी दोबारा पैदा करे और उसने उन (की मौत) की एक मियाद मुक़र्रर कर दी है जिसमें ज़रा भी शक़ नहीं उस पर भी ये ज़ालिम इन्कार किए बग़ैर न रहे

قُلْ لَّوْ اَنَّكُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّيْٓ اِذًا ۖ ۚ اَلْاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْاِنْفَاقِ ۖ ۚ وَكَانَ
الْاِنْسُنُ قَتُوْرًا ۖ ۚ

(ऐ रसूल) इनसे कहो कि अगर मेरे परवरदिगार के रहमत के खज़ाने भी तुम्हारे एख़्तियार में होते तो भी तुम खर्च हो जाने के डर से (उनको) बन्द रखते और आदमी बड़ा ही तंग दिल है

وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا مُوسَىٰ تِسْعَ ءَايَاتٍ ۖ بَيِّنَاتٍ ۚ فَمَسَّ بَنِي إِسْرَءِيلَ إِذْ جَاءَهُمْ فَقَالَ لَهُ ۖ
فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ يَمُوسَىٰ مَسْحُورٌ ۚ ا

और हमने यक्रीनन मूसा को खुले हुए नौ मौजिजे अता किए तो (ऐ रसूल) बनी इसराईल से (यही) पूछ देखो कि जब मूसा उनके पास आए तो फिरऔन ने उनसे कहा कि ऐ मूसा मैं तो समझता हूँ कि किसी ने तुम पर जादू करके दीवाना बना दिया है

قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا أَنزَلَ هَؤُلَاءِ إِلَّا رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ بِصَآئِرٍ وَإِنِّي لَأَظُنُّكَ
يَفِرْعَوْنُ مُثَبَّرٌ ۚ ا

मूसा ने कहा तुम ये ज़रूर जानते हो कि ये मौजिजे सारे आसमान व ज़मीन के परवरदिगार ने नाज़िल किए (और वह भी लोगों की) सूझ बूझ की बातें हैं और ऐ फिरऔन मैं तो ख्याल करता हूँ कि तुम पर यामत आई है

فَأَرَادَ أَنْ يَسْتَفِزَّهُمْ مِنَ الْأَرْضِ فَأَغْرَقْنَاهُ وَمَنْ مَّعَهُ ۚ جَمِيعٌ ۚ ا

फिर फिरऔन ने ये ठान लिया कि बनी इसराईल को (सर ज़मीने) मिठ से निकाल बाहर करे तो हमने फिरऔन और जो लोग उसके साथ थे सब को डुबो मारा

وَقُلْنَا مِنْ ۖ بَعْدِهِ ۚ لِبَنِي إِسْرَءِيلَ أَسْكُنُوا ۖ الْأَرْضَ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ آلِ عَادٍ جِئْنَا
بِكُمْ لَافِيفًا ۚ ا

और उसके बाद हमने बनी इसराईल से कहा कि (अब तुम ही) इस मुल्क में (खूब आराम से) रहो सहो फिर जब आखिरत का वायदा आ पहुँचेगा तो हम तुम सबको समेट कर ले आएँगे

وَبِالْحَقِّ أَنزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ۖ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا ۚ وَنَذِيرًا ۚ ا

और (ऐ रसूल) हमने इस कुरान को बिल्कुल ठीक नाज़िल किया और बिल्कुल ठीक नाज़िल हुआ और तुमको तो हमने (जन्नत की) खुशखबरी देने वाला और (अज़ाब से) डराने वाला (रसूल) बनाकर भेजा है

وَقُرْءَانًا ۙ فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ ۚ عَلَى النَّاسِ عَلَى مُكْتٍ ۚ وَنَزَّلْنَاهُ تَنْزِيلًا ۙ

और कुरान को हमने थोड़ा थोड़ा करके इसलिए नाज़िल किया कि तुम लोगों के सामने (ज़रूरत पड़ने पर) मोहलत दे देकर उसको पढ़ दिया करो

قُلْ ءَامِنُوا ۚ بِهِ ۚ أَوْ لَا تُؤْمِنُوا ۚ ۚ إِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا ۚ الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهِ ۚ إِذَا يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ يَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ سُجَّدًا ۙ

और (इसी वजह से) हमने उसको रफ़ता रफ़ता नाज़िल किया तुम कह दो कि ख़्वाह तुम इस पर ईमान लाओ या न लाओ इसमें शक़ नहीं कि जिन लोगों को उसके क़बल ही (आसमानी किताबों का इल्म अता किया गया है उनके सामने जब ये पढ़ा जाता है तो ठुड्डियों से (मुँह के बल) सजदे में गिर पड़ते हैं

وَيَقُولُونَ سُبْحَنَ رَبِّنَا ۚ إِن كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُولًا ۙ

और कहते हैं कि हमारा परवरदिगार (हर ऐब से) पाक व पाकीज़ा है बेशक हमारे परवरदिगार का वायदा पूरा होना ज़रूरी था

وَيَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ خُشُوعًا ۙ ۙ

और ये लोग (सजदे के लिए) मुँह के बल गिर पड़ते हैं और रोते चले जाते हैं और ये कुरान उन की खाकसारी के बढ़ाता जाता है (109) (सजदा)

قُلْ اُدْعُوا ۚ إِلَهَ ۚ أَوْ اُدْعُوا ۚ الرَّحْمَنَ ۚ أَيُّ ۚ مَا تَدْعُوا ۚ فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَلَا تَجْهَرُ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتُ بِهَا ۚ وَابْتَغِ بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ۙ

(ऐ रसूल) तुम (उनसे) कह दो कि (तुम को एख़तियार है) ख़्वाह उसे अल्लाह (कहकर) पुकारो या रहमान कह कर पुकारो (ग़रज़) जिस नाम को भी पुकारो उसके तो सब नाम अच्छे (से अच्छे) हैं और (ऐ रसूल) न तो अपनी नमाज़ बहुत चिल्ला कर पढ़ो न और न बिल्कुल चुपके से बल्कि उसके दरमियान एक औसत तरीका एख़तेयार कर लो

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا ۖ اَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ ۙ شَرِيكٌ ۙ فِى الْمُلْكِ ۙ وَلَمْ يَكُنْ
لَّهٗ ۙ وَلِيٌّ ۙ مِّنَ الدُّلِّ ۙ وَكَبَّرَهُ تَكْبِيرًا ۙ

और कहो कि हर तरह की तारीफ उसी खुदा को (सज़ावार) है जो न तो कोई औलाद रखता है और न (सारे जहाँ की) सल्तनत में उसका कोई साझेदार है और न उसे किसी तरह की कमज़ोरी है न कोई उसका सरपरस्त हो और उसकी बड़ाई अच्छी तरह करते रहा करो